1. सबटरापिकल सिंचित क्षेत्रों में बासमती धान (किस्म बासमती 370) की जैविक खेती

श्स्य विज्ञान केंद्र

जैविक खेती, बिना रसायनिक पदार्थो के प्रयोग से फसले उत्पन्न करने की एक विधि है।

हरी खाद (ढैंचा के साथ)

- इस विधि में जून माह के दूसरे सप्ताह में (45 दिन धान पौध रोपन से पहले) उसी खेत में जिसमे धान की फसल लेनी होती है ढैंचा की फसल जिसकी बीज मात्रा 60 कि.ग्रा. प्रति हेकटर को उगाए ।
- ढैंचा की फसल को फूल निकलने से पहले (लगभग 40-45 दिन की फसल) डिस्क हैरो से पांच से सात दिन पौध रोपण से पहले भूमि में पलटाई करें ।
- धान रोपण के लिए जून माह के तीसरे सप्ताह को 30 कि.ग्रा. बीज प्रति हेकटर के दर से प्रयोग करते हुए नर्सरी उगाए
- खेत की मिट्टी पलटने वाले हल से जुताई करे और फिर रोटावेटर के साथ गारा बनाए।
- 10 कविंटल प्रति हेकटर की दर से केंचुए की खाद को बिखेरै।
- ट्रायकोडर्मा हारजिमियम और सुडोमोनास फ्लोरसेन्स जैसे जैविक जीवों का मिश्रण, मृदा सुधारको की तरह 5 कि.ग्रा. प्रति हेकटर पौध रोपन से पहले उपयोग करे ।
- उसके उपरान्त जब पौध 25 से 30 दिन की हो जाए उसका रोपण 20 से.मी. लाइन से लाइन और 10 से.मी. पौध से पौध की दूरी रख कर करें।।
- धान की पौध को 5 % एन.एस.के.ई के घोल में पौध रोपण से पहले 30 मिनट के लिए गोल में डुबाए ताकि भुरा धब्बा रोग नियंत्रित हो सके।
- सितंबर माह के पहले सप्ताह में 10 कविंटल प्रति हेकटर कैंचुए खाद का प्रयोग दोबारा करें।
- सितंबर माह के पहले, दूसरे और तीसरे सप्ताह को तीन बार गौ मूत्र के छिडकाव (10 % Conc.) करें।
- तुलसी के पत्तो का घोल (10 % Conc.) का छिडकाव सितंबर माह के चोथे सप्ताह में भुरा धब्बा रोग के प्रबंधन के लिए करें।
- आवश्यकता अनुसार सिंचाई करें तांकि खेत में शुष्कता एवं आद्रता बनी रहे।

लाभ / प्रभाव

- मृदा में सुधार होता है ।
- फसल में अच्छे दाने होने के कारण अधिक मुद्रा लाभ होता है ।